→ इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर हम प्रतिपादित कर सकते हैं परिभाषा, पूर्ति वह मात्रा है जो उत्पादक या विक्रेता किसी समय विशेष पर एक निश्चित मूल्य पर बेचने को तैयार होता है।

पूर्ति एवं स्टॉक में अन्तर (Difference between Supply and Stock)

वस्तु की पूर्ति तथा उसके स्टॉक में अन्तर होता है। किसी वस्तु का स्टॉक उस की मात्रा को बतलाता है जो किसी विशेष समय में बाजार में मौजूद रहती है जबकि पूर्ति स्टॉक का वह भाग है जोकि विक्रेता एक निश्चित समय और एक निश्चित कीमत पर बेचने को तैयार रहता है। उदाहरण के लिए, किसी व्यापारी के पास गोदाम में 100 क्विंटल चावल है। यह चावल का स्टॉक (Stock) कहा जायगा। अगर 40 रुपये प्रति क्विंटल की दर से व्यापारी बाजार में 75 क्विंटल चावल बेचने को तैयार है, तो यह चावल की पूर्ति कही जायेगी।

पूर्ति के नियम (Law of Supply)

"यदि अन्य बातें समान रहें तो वस्तुओं की कीमत में वृद्धि होने पर उनकी पूर्ति बढ़ जाती है और कीमत कम होने पर उनकी पूर्ति घट जाती है।"

स्पष्ट है कि किसी वस्तु की कीमत तथा उसकी पूर्ति में सीधा या प्रत्यक्ष संबंध होता है। अतः पूर्ति का नियम सीधे संबंध को व्यक्त करता है।

उदाहरण — मान लीजिए कि एक किसान बाजार में अमरूद बेचना चाहता है। भिन्न-भिन्न कीमतों पर वह जितनी मात्रा में अमरूद बेचना चाहता है, वह निम्नलिखित प्रकार है —

तालिका - 01

कीमत (रुपये में)	पूर्ति की मात्रा (किलो में)
1	100
2	125
3	150
4	150
5	300
6	500

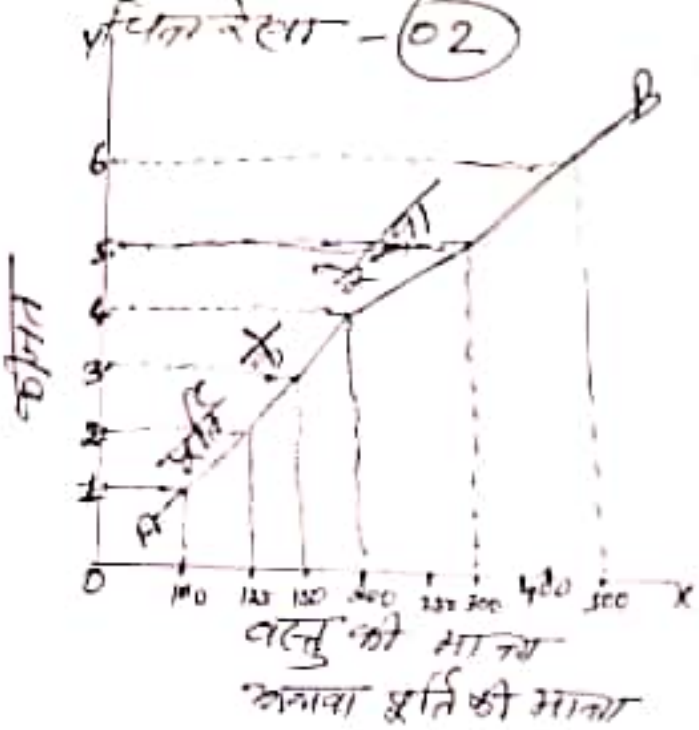

रेखाचित्र - 02

Lect. 11
microeconomics

मांग एवं पूर्ति : मौलिक विचार धारा के
(Demand and Supply : Basic framework)
अन्तर्गत

B.A. Hons
Economics

पूर्ति का सिद्धांत
(Theory of Supply)

Dr. Dineshwar Paswan
Assistant professor
Deptt. of Economics
MLS College Sarisab-pahi
(Madhubani)
Mobile No: 9973592631

पूर्ति का अर्थ
(Meaning of Supply)

:— वस्तु की कीमत के निर्धारण में मांग तथा पूर्ति दोनों शक्तियों का प्रभाव पड़ता है। उत्पादन के क्षेत्र में पूर्ति का अत्यधिक महत्व है। पूर्ति की मात्रा वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन पर निर्भर करती है। वस्तुओं की पूर्ति मांग की संतुष्टि के लिए होती है, और उत्पादनकर्ता मांग को ध्यान में रखकर ही वस्तुओं का उत्पादन करता है, बिना वस्तुओं एवं सेवाओं की पूर्ति के हमारी मांग एवं आवश्यकताओं की संतुष्टि नहीं हो सकती। उपभोग का संबंध मांग से है, किन्तु उत्पादन का संबंध पूर्ति से है।

पूर्ति की परिभाषा
(Definition of Supply) :— अर्थशास्त्र के अन्तर्गत

वस्तु की वह मात्रा जो एक निश्चित अवधि में एक निश्चित कीमत पर बाजार (market) में बेचने के लिए तैयार है उसे पूर्ति कहलाते हैं। जैसे — 100 रूपये प्रति क्विंटल की दर पर इस सप्ताह गेहूं की पूर्ति 5 हजार क्विंटल है। दूसरे शब्दों में, पूर्ति वस्तु की वह मात्रा है जो किसी विशेष समय में विशेष कीमत पर बाजार में बिकने आती है (The supply of anything at a given price is the amount of it which will be offered for sale per unit of time at that price)।

मांग के समान पूर्ति का कीमत से प्रत्यक्ष संबंध है। पूर्ति की परिभाषा भिन्न-भिन्न रूप में विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने निम्नलिखित किये हैं —

1. बेनहम के अनुसार, "पूर्ति का तात्पर्य वस्तु की उस मात्रा से लगाया जाता है जो प्रति समय इकाई में बिक्री के लिए उपलब्ध है।"[1]

2. लिप्से के अनुसार, "पूर्ति एक प्रवाह है, यह प्रतिदिन, प्रतिसप्ताह, प्रति माह या प्रति वर्ष (अर्थात् प्रति समय इकाई के रूप में) व्यक्त किया जाता है।"[2] (—Lipsey)

("Supply is a flow, it is much per day, week, month or year) | — Lipsey)

and, "Supply may means also the amount offered for sale per unit of Time.)" — Benham।

P.T.O

Scanned with CamScanner